

Level 4

फिनिश लाइन (बाल लघुकथा- गजेन्द्र ठाकुर) (कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा (बाल साहित्य) मेंहथमे ३१ मई २०१४केँ भेल ८२ म सगर राति दीप जरयमे पठित कथा)

Author: Gajendra Thakur
Illustrators: Angie & Upesh, Ankita Thakur, Ayoub Makotha, Brian Wambi, Greystroke, Ishita Sharma, Jemma Jose, Karmacharya K.K , Lê Thị Anh Thư, Nan Hom Noon, Nina Sabnani, Poulomi Pal, Priya Dali, Shirish Ghatge, Sunaina Coelho



फिनिश लाइन (बाल लघुकथा- गजेन्द्र ठाकुर) (कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा (बाल साहित्य) मेंहथमे ३१ मई २०१४कैं भेल ८२ म सगर राति दीप जरयमे पठित कथा)



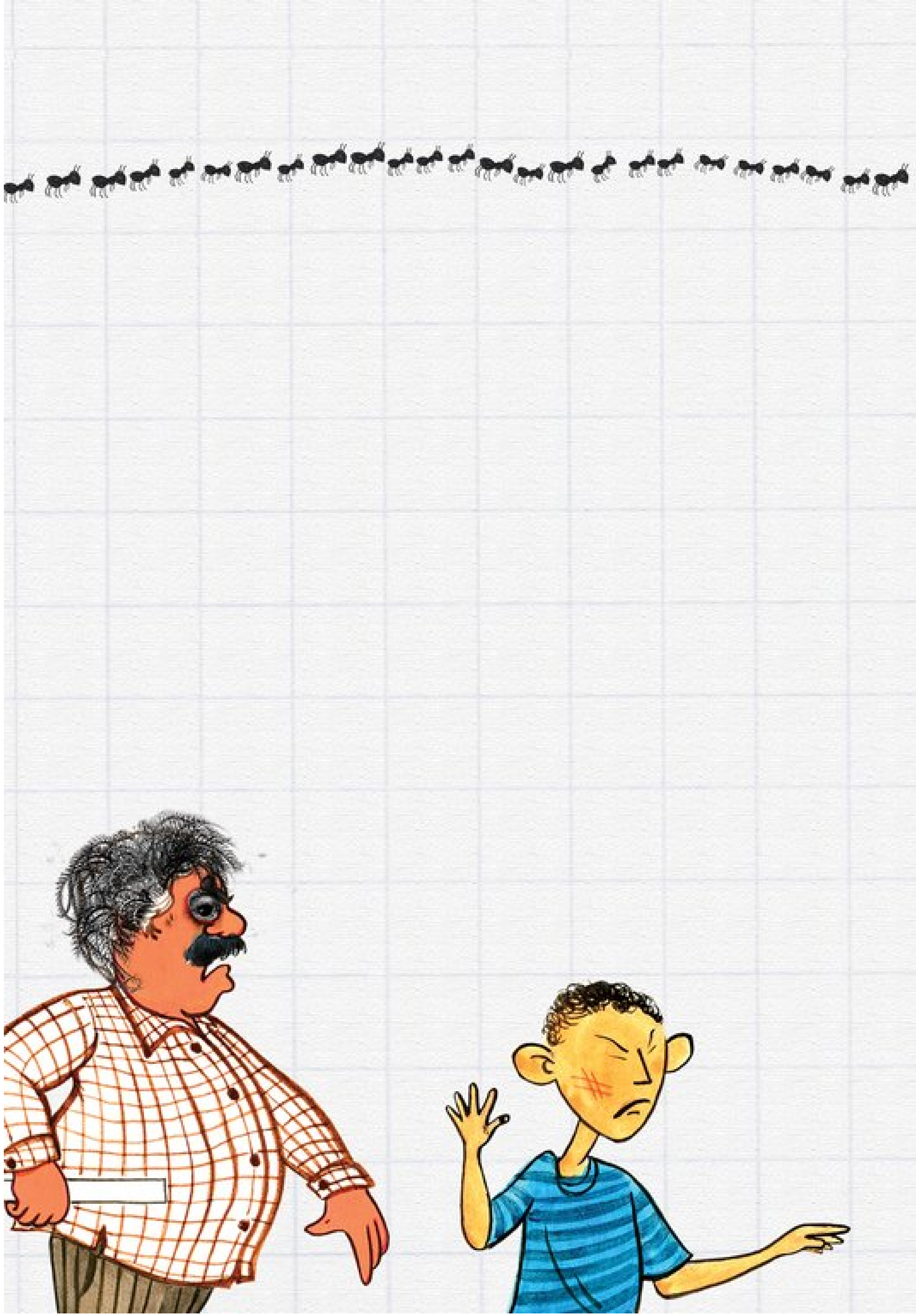
सर्वसीमासँ सभ स्कूल एकटा समदिया आयल छलै। खेला-धूपीक प्रतियोगिताक आमंत्रण आयल छै।



उद्गार अपन स्कूलमे सभसँ बेशी तेज दौगैए। सभ विद्यार्थी ओकरा लुक्खी कहै जाइ छथि। ओ जखन दौगैए तँ ओकर छाती आगाँ दिस उनार भऽ जाइ छै। आ से फिनिश लाइनपर एकदम्मी जगजियार भऽ जाइ छै।



ओकर बाद फिनिश लाइनपर आनो लोक पहुँचै छथि, मुदा कने थम्हि कऽ। माने उद्गार पहिल स्थानपर अपन स्थान सुरक्षित रखने छथि, कएक सालसँ। दोसर आ तेसर स्थान लेल प्रतियोगिता होइ छै।



मुदा नवका मास्टर साहैब उद्गारसँ प्रसन्न नै छथि। खास कऽ सर्वसीमाबला प्रतियोगिताक घोषणाक बाद। उद्गारकेँ ओ अपन दौगबाक तकनीकी ठीक करैले कहै छथि।



“उद्गार, अहाँ स्कूल स्तरपर ऐ दुआरे जीति जाइ छी किएक तँ अहाँक प्रतियोगी सभ कमजोर छथि। मुदा जँ जँ प्रतियोगिता बढ़त अहाँकेँ अपन गति बढ़बऽ पड़त”।



अपन टाइमर दिस नबका मास्टर-साहैब देखै छथि। हुनका लागै छलन्हि जे भऽ सकैए अपन प्राकृतिक तकनीकेसँ उद्गारक गति बढ़ि जेतै। मुदा से होइत नै देखि ओ एकटा निर्णय लैत छथि।



“उद्गार, अहाँ पाछाँ मुँहे उनार हेबाक बदलामे आगाँ दिस झुकि कऽ दौगबाक अभ्यास करू। पहिने अहाँकेँ लागत जे अहाँक गति घटि गेल अछि, मुदा आस्ते-आस्ते अहाँक गति बढ़त। पहिलुका तकनीकसँ अहाँ अधिकतम गति प्राप्त कऽ लेने छी। आब ओइमे वृद्धि नै भऽ रहल अछि”।

उद्गार आगाँ दिस झुकि कऽ आगाँ बढ़ैत फिनिश लाइनकेँ छूबाक प्रयास करऽ लागल।

ओकरा लागै छलै जे ओकर गति घटि तँ नै गेल छै।



ओकरा दिन-राति किछु नीक नै लागि रहल छै। अभ्यासमे ओ आठम स्थानपर रहल आ सेहो मास्टर साहैबक एकटा तकनीकसँ।
२० किलोमीटरक मिनी मैराथन ओ दौगि रहल छल। ओकरा बुझल नै छलै जे ओ कएयम स्थानपर अछि। मास्टर साहैब बगलसँ अपन स्कूटी दौगबैत निकललाह, “कने आर जोर लगाउ उद्गार, अहाँ चारिम स्थान पर छी”।



उद्गार जोर लगेलक एकटा प्रतियोगीकेँ पार केलक। स्कूलक प्रतियोगितासँ भरिगर अछि ई क्षेत्र-स्तरक अभ्यासो। आर जोर लगेलक उद्गार। दोसर प्रतियोगीकेँ पाछाँ केलक। स्टेडियम सोझाँ देखा पड़लै ओकरा आ संगे एकटा प्रतियोगी सेहो। ओ अन्तिम जोर लगेलक आ ओइ प्रतियोगीकेँ पार करैत स्टेडियम प्रवेश केलक आ फिनिश लाइन पार करिते खशि पड़ल। ओकरा भेलै जे जँ ओ चारिम स्थानपर दौगि रहल छल आ तीन गोटेकेँ ओ पाछाँ छोड़ि देलक तँ आब ओ प्रथम स्थानपर अछि आ स्वर्ण-पदक लेल ओकर नाम पुकारल जेतै।



मुदा ई की पहिल, दोसर, तेसर तँ छोड़ू ओकर नाम आठम स्थानपर पुकारल गेलै।
ओकरा कना गेलै।
ई नव तकनीक गरबड़ अछि आकि ओकरामे प्रतिभे नै छै।
मुदा पहिल तीन स्थानपर जे समय दर्ज भेलै से ओकर पुरान तकनीकक अधिकतम गतियोसँ बेशी रहै। नव तकनीकसँ ओ आठम स्थानपर आयल, मुदा पुरानो तकनीकसँ ओकरा मेडल नै भेटितिऐ। खएर ई तँ अभ्यास मैच अछि। दू मास आर बाँचल अछि।



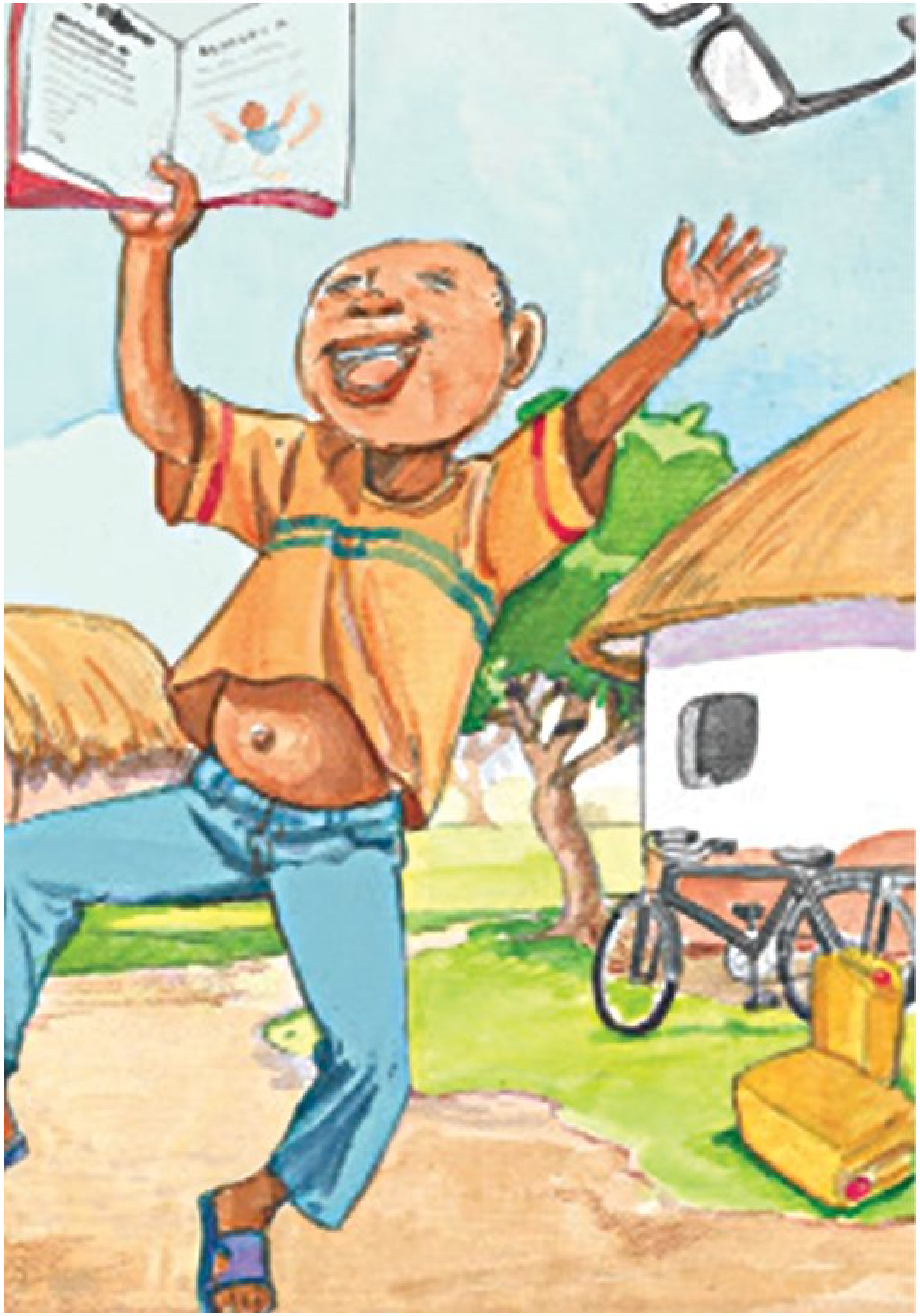
मुदा मास्टर साहैब अपन टाइमरक हिसाब राखि रहल रहथि।
“हँ, उद्गारक गति घटल छै, मुदा किछु दिनु धरि ई घटिते रहलै आ ओकर न्यूनतम सीमा आबि गेलै। आब एकर गति बढ़नाइ शुरुह भेल छै, आ बढ़ैत-बढ़ैत ओ अपन पुरान अधिकतम गति सीमाकेँ पार कऽ जएत”।
मास्टर साहैब टाइमर बन्द करैत छथि आ खुशीसँ उद्गारक फिनिश लाइनकेँ छुबिते जोरसँ चिकड़ै छथि, “बहुत दिनुका बाद आब ई फेर बढ़ब शुरू भेल अछि उद्गार”।



उद्गार कनोन मुँह घुमबैत मास्टर साहैब दिश ताकि रहल अछि। हिनका की भेलन्हि? हम कहियो सोचनहियो नै रही जे कोनो एहन दिन आओत जखन हम आठम स्थानपर रहब! आ ई तँ खुशी छथि।
मास्टर अपन एनेलिसिस पुस्तिका निकालैत छथि आ उद्गारकेँ देखबै छथि।



उद्धारक अभ्यास गति पकड़ि लेलकै। ओकरो आब बुझाइ छै जे नव गतिमे ओकरा बेशी मोन लागि रहल छै। शरीर आब अकड़ै नै छै, हल्लुक बुझाइ छै।
टाइमर बता रहल छै जे ओकर पुरान अधिकतम सीमा पार भऽ गेल छै, उद्धार ओकरा कएक बेर भोरुके अब्यासमे पार कऽ गेल छल। आब तँ कहियो ई नै होइ छै जे ओ ओइ सीमासँ कम गतिपर दौगैत हुअय।
आब ओकर प्रतियोगिता अपनेसँ छै।
आ लिअ प्रतियोगिताक समय आबि गेल। काल्हि छी प्रतियोगिता।
सीटी सायरन आआआआ फिनिश लाइइइइइइइइन......
मुदा ई की। अजगुते भऽ गेल।



उद्गार किलकारी मारि रहल अछि, ओकरा स्वर्ण पदक भेटलै आ मास्टर साहैब नोरायल छथि। मुदा हुनका कानैत कियो नै देखने छल। ओ कहै छला जे ओ एक दिन कनता आ ओइ दिन कनता जहिया ओ सभसँ बेशी प्रसन्न हेता।

Story Attribution:

This story: फिनिश लाइन (बाल लघुकथा- गजेन्द्र ठाकुर) (कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा (बाल साहित्य) मेंहथमे ३१ मई २०१४कें भेल ८२ म सगर राति दीप जरयमे पठित कथा) is written by Gajendra Thakur . © Gajendra Thakur , 2022. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Images Attributions:

Cover page: Many children in the school playground, by Priya Dali © Pratham Books, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: Girl meets her friends, by Karmacharya K.K © Room to Read, 2003. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Rohan invites all to golden circle, by Poulomi Pal © Poulomi Pal, 2022. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: A boy running, by Shirish Ghatge © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: Girls running for the running race , by Jemma Jose © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: Teacher scolding boy, by Nina Sabnani © Pratham Books, 2012. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: Someone holding a stopwatch, by Shirish Ghatge © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: Toy tiger with biscuits, by Lê Thị Anh Thư © Room to Read, 2012. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: Old angry woman, by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: marathon, by Ishita Sharma © Ishita Sharma, 2022. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 11: Group of people with the olympic torch running in front of a mountain, by Brian Wambi © African Storybook Initiative, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Images Attributions:

Page 12: kid standing on a playground, by Sunaina Coelho © Pratham Books, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: Boy losing his cap in the wind, by Angie & Upesh © Pratham Books, 2007. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: A boy holding a magnifying glass and a girl laughing, by Ankita Thakur © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: Boy winning a trophy, by Nan Hom Noon © The Asia Foundation, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: Boy jumping with joy, by Ayoub Makotha © Room to Read, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

फिनिश लाइन (बाल लघुकथा-गजेन्द्र ठाकुर) (कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा (बाल साहित्य) मेंहथमे ३१ मई २०१४कैं भेल ८२ म सगर राति दीप जरयमे पठित कथा)

(Maithili)

“उद्गार, अहाँ पाछाँ मुँहे उनार हेबाक बदलामे आगाँ दिस झुकि कऽ दौगबाक अभ्यास करू। पहिने अहाँकेँ लागत जे अहाँक गति घटि गेल अछि, मुदा आस्ते-आस्ते अहाँक गति बढ़त। पहिलुका तकनीकसँ अहाँ अधिकतम गति प्राप्त कऽ लेने छी। आब ओइमे वृद्धि नै भऽ रहल अछि”।

This is a Level 4 book for children who can read fluently and with confidence.